द्वितीय अध्याय

रामभक्ति काव्य परंपरा

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्याय “रामभक्ति काव्य परंपरा” के अंतर्गत मैंने राम-भक्ति मूलक प्रधान काव्यों का तथा उस काव्य में निहित राम-भक्ति की व्याख्या संक्षेप में प्रस्तुत की है । रामभक्ति-मूलक काव्य लिखने की परंपरा और इसकी वर्तमान युग तक परिव्याप्ति का यहाँ संक्षिप्त दिग्गदर्शन हुआ है । रामकथा त्रेता युग से काव्य रचना का एक प्रमुख उपादान तथा भक्ति का एक सुंदर उदाहरण बन द्वापरयुग के पश्चात् कलियुग में भी समाज का कल्याण करती आ रही है । यही कारण है कि राम कथा तथा इसके मूल आदर्श लोगों के अपने आदर्श बन गए हैं तथा इसके पद मानव जाति का कंठाहार बन उसकी शोभा बढ़ाते आ रहे हैं ।

2.2 रामभक्ति काव्य परंपरा

तुलसीदास अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ ‘रामचरितमानस’ में कहते हैं कि रामकथा गंगा और यमुना के शीतल जल की तरह पवित्र और कृपामयी है जो श्रोता को शांति प्रदान करती है । यह सभी पापों का नाश करनेवाली पापनाशिनी भगीरथी प्रवाहिनी है । तुलसीदास का यह कथन पूर्णतया सत्य है । राम कथा आज से ही नहीं अपितु युगों से मानव जाति का उद्धार करती आ रही है । तुलसीदास के शब्दों में-

बुध बिश्राम सकल जन रंजनी । रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ।।

रामकथा कलि पनंग भरनी । पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी ।।(तुलसीदास 2015:53)

डॉ॰ नगेंद्र द्वारा संपादित ‘हिन्दी साहित्य का इतिहास’ पुस्तक में लेखक डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक राम काव्य के उद्भम तथा इसके प्रधान सृजनकर्ता का उल्लेख करते हुए लिखते हैं-

> प्रागैतिहासिक युग से आधुनिक युग तक मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र के शील, शक्ति एवं सौंदर्य से मंडित अलौकिक व्यक्तित्व के विविध रूपों ने जनमानस को आकृष्ट किया है । रामकाव्य-परंपरा के उद्भव और विकास का अनुशीलन करनेवाले विद्वानों के मतानुसार राम उत्तर-वैदिक काल के दिव्य महापुरुष हैं, वेदों में कुछ स्थलों पर 'राम' शब्द का प्रयोग अवश्य हुआ है किंतु उसका अर्थ दशरथ-पुत्र राम नहीं, अपितु अन्यान्य व्यक्तियों से है । उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर 'वाल्मीकि रामायण' को आदिकाव्य मानकर रामकथा का मूल स्रोत स्वीकार किया जाता है ।(नगेंद्र 2003:180)

कहा जाता है कि रामकथा का मूल रूप वाल्मीकि रामायण है । इसी कथा को ही आधार मानकर परवर्ती युग में रामकथा का सृजन प्रारंभ हुआ । वाल्मीकि के 'रामायण' तथा अन्य काव्य ग्रंथों में वर्णित है कि महर्षि वाल्मीकि को सर्वप्रथम रामकथा देवर्षी नारद ने सुनाई थी । उसी के पश्चात् उन्होंने रामायण की रचना की । उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार वाल्मीकि को आदि कवि माना जाता है, क्योंकि सर्वप्रथम वाल्मीकि ने ही राम-काव्य रचना कर के राम-कथा-जगत का श्रीगणेश किया था ।

ब्रह्मा नारद के साथ अवतीर्ण होकर महर्षि वाल्मीकि को काव्य सृजन का आदेश देते हैं । वे कहते हैं कि जिस प्रकार से वाल्मीकि ने क्रौंच पक्षी के वध को सुंदर काव्य-पंक्ति में बद्ध किया उसी प्रकार वे एकचित्त भाव से रामायण की भी रचना करें । ब्रह्मा ने बताया की आयोद्धा में राजा दशरथ के घर पर स्वयं नारायण राम रूप में अवतार ग्रहण करेंगे । अतः वे नारद के मुख से सारी कथा सुन कर रामायण की रचना करें । नारद से संपूर्ण कथा को सुनने के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना राम जन्म के पूर्व कर दी थी ।

युग-युगांतर में अनेकों रामकाव्यों का प्रणयन होता आ रहा है । इन सभी ग्रंथों में से कुछ प्रमुख ग्रन्थों में उल्लेखित राम-कथा तथा नामों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

2.2.1 राम कथा का आधार ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण'

महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में 24000 श्लोकों में 'रामायण' की रचना की थी। 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार राम कुल 11000 वर्षों तक इस पृथ्वी पर शासन करते हैं। यही एक मात्र मूल राम-काव्य है जिसके आधार पर अन्य राम-काव्यों का विभिन्न युगों में प्रणयन हुआ है। 'रामायण' के पश्चात् एक विशाल परंपरा देखने को मिलती है जो द्वापर युग से कलियुग तक अपनी प्रवाह में निमग्न गतिशील है। यह प्रवाह बौद्धों और जैनों के काव्यों से लेकर विविध पुराणों तथा महाभारत तक प्रवाहित होती रही है। परवर्ती युग में भक्तिकाल तथा रीतिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रवाहमान और अविचलित है।

2.2.2 भारतीय पुराणों तथा उपनिषदों में रामकथा

प्राचीन काल में मूलतः भारत की सर्व प्राचीन भाषा संस्कृत में ही इन पुराणों तथा उपनिषदों की रचना हुई थी। ये पुराण भारत के सर्वप्राचीन ग्रंथों में से ही नहीं बल्कि ये ग्रंथ भारत की संस्कृति तथा संपूर्ण इतिहास तथा धर्म का साक्षात् प्रमाण स्वरूप हैं। इन ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है जिनमें राम कथा का भी उल्लेख हुआ है। इन ग्रंथों का रचनाकाल बहुत ही संदिग्ध है। परंतु यह सिद्ध है कि 'रामायण' के पश्चात् इन ग्रंथों का प्रणयन प्रथमतः हुआ था। राम-काव्य के महान ज्ञाता डॉ. परामलाल गुप्त एक स्थान पर लिखते हैं-

> "रामायण" और "महाभारत" ऐसे आकार ग्रंथ हैं, जो भारतीय जन-जीवन को निरंतर उत्प्राणित ही नहीं करते रहे, बल्कि काव्य-रचना की प्रेरणा भी देते रहे। इन्हें भारतीय संस्कृति की आधार-शिला कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं है।(गुप्त 1973:01)

विविध पुराणों तथा उपनिषदों में रामकाव्य का वर्णन मिलता है । यथा,- महाभारत, हरिवंश पुराण, नरसिंह पुराण, विष्णुपुराण, वायु पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, कुर्म पुराण, अग्नि पुराण, स्कंद पुराण, गरूण पुराण, लिंग पुराण, भविष्य पुराण, नारदीय महापुराण, कालिका पुराण, पद्म पुराण, शिव पुराण, कल्कि पुराण और भागवत पुराण ।

महर्षि वेदव्यास ने 'भागवत पुराण' के 'नवम स्कंध' में सूर्यवंशी राजाओं के वंश परंपरा का वर्णन तथा राम के जन्म से लेकर वैकुंठ प्रयाण तक की कथा का संक्षिप्त वर्णन किया है । डॉ॰ नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में डॉ. विजयेंद्र स्नातक लिखते हैं-

> विष्णु-पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण और कूर्म पुराण में रामकथा सर्वाधिक वैविध्य संपन्न है । वाराह, अग्नि, लिंग, वामन, ब्रह्म, गरुड़, स्कंद, पद्म, ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणों में भी रामकथा के अनेक प्रसंग दृष्टिगत होते हैं । इनमें परमब्रह्म स्वरूप में राम की प्रतिष्ठा हुई है।(नगेंद्र 2003:181)

इन विविध पुराणों के अतिरिक्त भारतीय संहिता तथा विभिन्न उपनिषदों में भी रामकथा का वर्णन हुआ है । जैसे- 'अगस्त्य संहिता', 'कलि राघवसंहिता', 'वृहद राघव संहिता', 'शिव संहिता', 'रामोत्तर तापनीयउपनिषद' आदि ग्रंथों में राम का उल्लेख हुआ है ।

इनके अतिरिक्त कुछ और रामकथा है । जैसे- 'योगवशिष्ठ रामायण', 'आध्यात्म रामायण', 'अद्भूत रामायण', 'आनंद रामायण' आदि में भी रामकथा वर्णित है ।

2.2.3 विविध महाकाव्यों में रामकथा

इसके अंतर्गत मैंने कई सारे महाकाव्यों और बौद्ध कथाओं का उल्लेख किया है,-

2.2.3.1 कालिदास कृत 'रघुवंशम्'

संस्कृत के प्रकांड पंडित तथा 'कुमारसंभवम्' के रचयिता महाकवि कालिदास ने इस महान ग्रंथ 'रघुवंशम्' की रचना की थी । इसमें रामकथा वाल्मीकि रामायण पर आधारित कर दसवें से लेकर पंद्रहवें सर्ग तक के मध्य राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म से लेकर राम के वैकुंठ प्रयाण तक की कथा का वर्णन हुआ है ।

इस महान ग्रंथ के अतिरिक्त 'पद्मचरितम्', 'जानकी हरण', 'रामचरित', 'रामायण मंजरी', 'उदार राघव', 'राघवोल्लास', 'रामचंद्रोदय', 'श्रीरामविजय', 'रामरहस्य' इत्यादि काव्य भी रामकथा पर आधारित हैं ।

इन काव्यों के अतिरिक्त कुछ खंड काव्यों की भी रचना प्रचुर मात्रा में हुई है । यथा- 'रामाभ्युदय', 'जानकी परिणय', 'संगीत रघुनंदन', 'सीता स्वयंवर' तथा चंपू साहित्य में- 'चंपू रामायण', 'अमोघ राघवचंपू', 'भारत चंपू', 'चित्र चंपू' इत्यादि प्रचलित है ।

'भट्टिकाव्य' या 'रावणवध' नाम से विख्यात वाल्मीकि रामायण के आधार पर रचित इस काव्य शास्त्रीय ग्रंथ की भी रचना राम काव्य का विस्तार करती है ।

इस प्रकार से रामकाव्याश्रित अनेक काव्य ग्रंथों की रचना राम-कथा लिए हुए रचित हुई है । परंतु सबका उल्लेख यहाँ संभव नहीं, कुछ का उल्लेख ही यहाँ पर किया गया है ।

2.2.3.2 बौद्ध तथा जैन साहित्य में रामकथा

बौद्ध साहित्य में भी रामकथा का प्रचुर प्रणयन हुआ था। जातक साहित्य में सुरक्षित तीसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व रचित इन काव्यों में से 'दशरथ जातक', 'अनामकं जातकम्', 'दशरथ कथानम्' आदि प्रसिद्ध है।

जैन साहित्य के अंतर्गत विमलसूरि की रामकथा में 'पउम चरियं' तथा स्वयंभू की 'पउम चरिउ' प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त गुणभद्राचार्य की 'उत्तरपुराण' प्रसिद्ध है।

2.2.3.3 अन्य भारतीय भाषा-साहित्य में राम कथा

अन्य भारतीय भाषाओं में तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, बंगला, मराठी, गुजराती, कश्मीरी, पंजाबी, हिंदी तथा असमिया भाषा में राम काव्यों की भरमार हुई है।

तमिल में रचित कम्बन कवि की 'कम्ब रामायण', तेलुगु में रचित नन्नय कवि की 'राघवाम्युदयमु' तथा रंगनाथ कृत 'द्विपद रामायनमु या रंगनाथ रामायणमु, कुमारी आतुकूरि मोल्ला कृत 'संक्षिप्त रामायणमु' तथा कट्टा वरदराजु कृत 'द्विपद रामायणमु' प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त मलयालम में रचित श्रीरामन् कवि कृत 'इरामचरितम्' महाकवि रामानुजन कृत 'मलयालम रामायण' तथा उड़िया में रचित बलरामराज (द्वितीय) कृत 'विलंका रामायण', उपेंद्र भंज कृत 'बैदेहीश विलास' तथा बंग्ला साहित्य में रचित कृतिवास ओझा कृत रामायण या श्री पांचाली तथा मधुसूदन दत्त कृत 'मेघनाथ वध' आदि बहुत लोकप्रिय राम काव्य का प्रणयन हुआ था।

उर्दू साहित्य में मुंशी जगन्नाथ खुश्तर कृत 'रामायण खुश्तर', शंकरदयाल 'फर्हत' कृत 'रामायण मंजूम' तथा फारसी में रचित गोपाल कवि कृत 'तर्जुमा-इ-रामायण' प्रसिद्ध है। चीनी भाषा में भी वाल्मीकि 'रामायण' का 'काङ् सङ्ही' कवि ने चीनी भाषा में अनुवाद किया था।

अन्यान्य भारतीय भाषाओं में सैकड़ों नाम कथात्मक काव्यों की रचना होती रही है । चुकि मेरा अध्ययन क्षेत्र हिंदी और असमिया रामायण में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता ही मुख्य रूप से रहा है । अतः मैं यहाँ हिंदी तथा असमिया रामकाव्य का संक्षिप्त इतिहास वर्णन करने का प्रयास कर रहा हूँ ।

2.3 हिंदी राम काव्य परंपरा

हिंदी साहित्य के इतिहास को देखने पर इसके चारों कालों- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल में रचित राम काव्य परंपरा का एक व्यापक रूप स्पष्ट होकर सामने आता है । राम काव्य या राम कथा का गायन हिंदी साहित्य में आदिकाल से ही होता आ रहा है । परंतु इसका व्यापक और महान साहित्य भक्तिकालीन कवियों द्वारा ही संपादित किया गया था । डॉ॰ नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में डॉ. विजयेंद्र स्नातक ने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' ग्रंथ में इस तथ्य को व्यक्त करते हुए कहा है,-

> हिंदी साहित्य का आदिकाल समसामयिक राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण की दृष्टि से रामकाव्य की रचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त काल था । इस युग में कविगण मर्यादा-पुरुषोत्तम राम की शोर्य-शक्ति से समन्वित लीलाओं का गान करके बाह्य शक्तियों के आक्रमणों के विरुद्ध राष्ट्र की सोयी हुई उर्जा को उद्बुद्ध कर सकते थे, किंतु उन्हें अपने आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करने से इतना भी अवकाश नहीं था कि वे राम के लोकरक्षक पावन चरित्र की ओर आकर्षित हो पाते । इस युग की कृतियों में मंगलाचरण अथवा स्तुति के रूप में कहीं-कहीं रामकथा के कुछ प्रसंग दृष्टिगत हो जाते हैं ।(नगेंद्र 2003:184)

डॉ॰ नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक भक्तिकाल और रीतिकाल की तुलना में रामभक्ति के विषय में आगे लिखते हैं-

> रामकथा के ओज एवं माधुर्य को जन-मानस की भावभूमि पर अधिष्ठित करने का श्रेय भक्तिकालीन भक्त-कवियों को ही प्राप्त है: रीतिकालीन रामकाव्य के प्रणेताओं की दृष्टि तो अपने समसामयिक कृष्णकाव्य-प्रणेताओं की भाँति राजदरबारों के ऐश्वर्य से इतनी अधिक अभिभूत हो चुकी थी कि उन्हें राम के लोकरक्षक रूप की अपेक्षा उनके रसिक रूप में अधिक आकर्षण प्रतीत हुआ और अपने पूर्ववर्ती भक्त-कवियों की मर्यादा को वे विस्तृत करते चले गये। भक्तिकाल का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण भी राम के लोकरक्षक रूप की अभिव्यक्ति के सर्वाधिक अनुकूल था । विदेशी शक्तियों से आक्रांत सामाजिक दृष्टि से वैषम्य-पीड़ित, धार्मिक धरातल पर सिद्धों एवं तांत्रिकों के विविध मत-मतांतरों से ग्रस्त नैराश्य-मुक्त हिंदू जनता को राम के असुर-संहारक, शरणागत-प्रतिपालक अलौकिक रूप ने मधुमय संबल प्रदान किया ।(नगेंद्र 2003:185)

हिन्दी रामकाव्य परंपरा को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजन करके देखना उचित होगा । तुलसीदास रामकाव्य के महान लेखक तथा समाज के पथ प्रदर्शक रहे हैं । अतः इन्हीं को केंद्र में रखकर ये विभाजन किया गया है । इन तीनों विभाजनों का क्रमानुसार वर्णन इस प्रकार है-

2.3.1 तुलसी पूर्व हिंदी रामकाव्य परंपरा

वैसे तो चंदवरदाई द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' में रामकथा का उल्लेख मिल जाता है । परंतु इन ग्रंथों में विस्तारपूर्वक रामकथा का अभाव है तथा इन ग्रंथों का उद्देश्य रामभक्ति न होकर राजाओं का प्रशस्ति वर्णन मात्र ही रहा है । तुलसी से पूर्व रामभक्त कवियों में रामानंद की शिष्य परंपरा की देन विशेष उल्लेखनीय है । रामावत संप्रदाय के भक्तों में रामभक्ति का प्रभाव तथा उनकी रचनाओं में राम के प्रति अगाध भक्ति को प्रचूर मात्रा में देखा जा सकता है । इन कवियों की कुछ कृतियों तथा कविजनों का नाम विशेषोल्लेख योग्य है,-

2.3.1.1 स्वामी रामानंद

तुलसी पूर्व रामभक्ति परंपरा में रामानंद का नाम उल्लेखनीय है। स्वामी रामानंद द्वारा रचित 'वैष्णव मताब्द भास्कर', 'श्रीरामार्जुन-पद्धति' तथा 'रामरक्षास्त्रोत' प्रसिद्ध ग्रंथ है । हनुमान की स्तुति का एक सुंदर उदाहरण द्रष्टव्य है जिसका आज भी भारतीय जनमानस बड़ी ही भक्ति भावना से कंठ में बसा कर गायन करते हैं-

आरति कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।

जाके बल भरते महि कांपै, रोग सोग जाकि सिया न ज्यांपै ।

अंजनिसुत महाबलदायक साधू संत पर सदा सहायक ।।

गाढ़ परै कवि सुमिरौं तोहीं होउ दयाल देहु जस मोंही ।।(नगेंद्र 2003:186)

2.3.1.2 अग्रदास

रामानंद के शिष्य अग्रदास का भी रामकाव्य परंपरा में विशेष स्थान है । इनके द्वारा विरचित मुख्य ग्रंथों में,- 'ध्यानमंजरी', 'अष्टयाम', 'रामभजनमंजरी', 'उपासना-बावनी' और 'पदावली' विशेष प्रसिद्ध है ।

2.3.1.3 ईश्वरदास

ईश्वरदास भी एक सच्चे रामभक्त तथा राम गुण निधि के गायक रहे हैं। इनकी प्रधान रामभक्ति परंपरा में आने वाले काव्यों में- 'भक्त मिलाप' तथा 'अंगदपैज' भी बहुत उल्लेखनीय रचना है।

2.3.2 तुलसीदासकालीन हिंदी रामकाव्य परंपरा

तुलसीदास तथा उनके समकालीन कवि जिन्होंने रामभक्ति परंपरा से युक्त होकर काव्य रचना किया था उनके अनेक काव्य प्राप्त हैं । इन रचनाकारों में राम भक्ति का सर्वाधिक विकसित और सुदृढ़ रूप प्रस्फूटित हुआ है । इन कवियों में,-

2.3.2.1 तुलसीदास

हिंदी रामकाव्य परंपरा के अग्रदूत तथा महान रामभक्त कहे जाने वाले तुलसीदास रामकथा के वास्तविक अमर गायक हैं । इनकी रामभक्ति सराहनीय तथा अद्वितीय है । इनके द्वारा प्रणीत ग्रंथों का उल्लेख इसके पूर्व के अध्याय में विस्तार पूर्वक हो चुका है ।

तुलसीदास की भक्ति-भावना राम के प्रति समर्पित तथा अटल है । इनके काव्य समाज का कंठहार बन आज भी लोगों का पथ प्रदर्शन करते आ रहे हैं । गोस्वामीजी सच्चे अर्थों में एक लोकनायक तथा भविष्य द्रष्टा कवि रहे हैं ।

2.3.2.2 नाभादास

तुलसी के समय में कवि नाभादास भी राम भक्ति परंपरा के प्रमुख कवियों में आते हैं । इन्होंने ‘भक्तमाल’ की रचना की थी ।

तुलसीदास के समकालीन कई कवि हुए थे जिन्होंने राम काव्य का प्रणयन किया था । केशवदास की ‘रामचंद्रिका’ का भी विशेष स्थान है ।

2.3.3 तुलसीदासोत्तर राम काव्य परंपरा

चतुर्भुजदास कृत ‘रामचरित्र’, भगवतीदास कृत ‘बृहद सीता सतु’ तथा ‘लघु सीता सतु’ ग्रंथ प्रसिद्ध है । इनके अतिरिक्त माधोदास दधिवाड़िया कृत ‘राम रासौ’, लालदास कृत ‘भरत की बारहमासी’ तथा ‘अवध विलास’ और मलूकदास कृत ‘राम औतार लीला’ भी प्रसिद्ध है । बालकृष्ण नायक ‘बालअली’ कृत ‘ध्यानमंजरी’ छत्रसाल कृत ‘रामावतार के कवित्त’, ‘रामध्वजाष्टक’, ‘हनुमानपचीसी’, ‘श्रीराधाकृष्न पचीसी’ इत्यादि तथा जमुनादास कृत ‘गीत रघुनंदन’ प्रसिद्ध राम काव्य है ।

रामसखे कृत ‘दैताभूषण’, ‘पदावली’, ‘रूपरसामृतसिंधु’, ‘सीतारामचंद्र रहस्य पदावली’ तथा रामचरण दास की ‘ अमृतखंड, ‘अष्टयाम सेवाविधि’, ‘उपासनाशतक’, ‘कवितावली’, ‘छप्पयरामायण’ जपमाला संग्रह इत्यादि प्रसिद्ध है ।

रामगुलाम द्विवेदी कृत ‘कवित्त प्रबंध’, ‘दोहावली रामायण’, ‘बरवा’, ‘रामकृष्ण सप्तक’, ‘राम गीतावली’, ‘राम विनय’, ‘रामस्तवराज’, ‘ललित नामावली’, ‘विनय नवपंचक’, ‘श्री रामाष्टक’ तथा हनुमानाष्टक आदि प्रसिद्ध है ।

इनके अतिरिक्त आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत ‘रामलीला’(1884 ई.) तोताराम वर्मा कृत ‘राम रामायण’(1888 ई.), सुधाकर द्विवेदी कृत ‘रामकहानी’, प्रेमचंद्र कृत ‘रामचर्चा’, महात्मा गांधी कृत ‘राम नाम’ इत्यादि राम काव्य प्रचलित हैं । इनके अतिरिक्त ज्ञारसी राम की ‘रघुबर सूयश प्रकाश’, रामाधीनदास की ‘रामायण दिग्विजय कवितावली’(1975 वि.), शिवरत्न शुक्ल ‘सिरस’ कृत ‘श्री रामावतार’(1990 वि.), अमृतलाल माथुर कृत ‘राम रसामृत’, ‘यमक रामायण’, काशी प्रसाद दूबे की ‘वियोगिनी सीता’ आदि सुप्रसिद्ध है।

निराला की ‘पंचवटी प्रसंग’ तथा ‘राम की शक्ति पूजा’ तथा मैथिलीशरन गुप्त की ‘पंचवटी’(1982 वि.), ‘साकेत’ (1988 वि.) बहुत प्रसिद्ध काव्य हैं। अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ कृत ‘वैदेही वनवास’, केदरनाथ मिश्र ‘प्रभाव’ कृत ‘कैकेयी’, हरदयालु सिंह का ‘रावण’ महाकाव्य(2009 वि.) इत्यादि तुलसीदासोत्तर युग के श्रेष्ठ रामकाव्यों में आते हैं।

इनके अतिरिक्त भी सैकड़ों रचनाकार तथा उनके राम काव्य को देखा जा सकता है। परंतु संक्षिप्त रूप में इसका उल्लेख किया गया है।

2.4 असमिया रामकाव्य परंपरा

भारत की प्रादेशिक भाषाओं में असमिया भाषा एक उन्नत भाषा में से एक है तथा इस भाषा का साहित्य भी पर्याप्त समृद्ध तथा प्रौढ़ है। राम काव्य परंपरा की दृष्टि से देखा जाए तो तुलसीदास से भी पूर्व वाल्मीकि ‘रामायण’ का अनुवाद असमिया भाषा में ही हुआ था। माधव कंदली विरचित ‘असमिया रामायण’ वास्तविक तौर पर आधुनिक भारतीय भाषाओं में अन्यतम रचना है। असमिया राम-काव्य-परंपरा के महान कवियों तथा उनकी रचनाओं का विवरण इस प्रकार है,-

2.4.1 माधव कंदली कृत ‘असमिया रामायण’

आधुनिक भारतीय भाषाओं में उत्तर भारत में माधव कंदली विरचित ‘असमिया रामायण’ ही प्रथम राम काव्य है। इसकी रचना महाकवि माधव कंदली ने जयंतपूर के चौदहवीं शती के कछाड़ी राजा महामाणिक्य के आग्रह पर की थी।

2.4.2 माधवदेव कृत असमिया रामायण का आदिकांड

कहा जाता है कि माधव कंदली ने भी महर्षि वाल्मीकि की तरह सात कांड 'रामायण' की रचना की थी, परंतु कालक्रमवश यह संपूर्ण रामायण आज हमारे पास उपलब्ध नहीं है। इसके 'आदि' और 'उत्तर कांड' का पता अब तक नहीं लग पाया है। अतः माधव कंदली के प्रति विनम्र श्रद्धा अर्पित करते हुए इसके उत्तरकांड की रचना स्वयं शंकरदेव ने तथा 'आदिकांड' की रचना माधवदेव ने की थी। महापुरुष माधवदेव ने ही 'रामायण' के आदि कांड की रचना की थी। अतः इनके 'आदिकांड' का भी रामकाव्य परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान है।

2.4.3 श्रीमंत शंकरदेव विरचित 'उत्तरकांड'

श्रीमंत शंकरदेव को जहाँ एक ओर असमिया समाज तथा संस्कृति का उद्धारकर्ता माना जाता है, वहीं दूसरी ओर असमिया साहित्य के महाकवि एवं काव्य-जगत के प्राण-पोषक भी कहा जाता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में असमिया संस्कृति को सुंदर ढंग से संजोया तथा सँवारा है। इनके द्वारा विरचित 'असमिया रामायण' का उत्तरकांड राम-काव्य-परंपरा का एक उन्नत उदाहरण है। केवल 'उत्तरकांड' में ही नहीं अपितु अपने समस्त काव्यों तथा नाटकों में इन्होंने राम भक्ति की महिमा को सुंदर काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

2.4.4 भकतीया रामायण

अनंत कंदली कृत 'भकतीया रामायण' भी राम-काव्य-परंपरा का एक अन्यतम उदाहरण ग्रंथ है।

2.4.5 दुर्गावरी रामायण

सोलहवीं शती के कवि दुर्गावर ने भी रामायण की रचना की थी। इनके रामायण को 'दूर्गावरी रामायण' या 'गीति रामायण' कहा गया है।

2.4.6 रामायण कथा

'रामायण कथा' अठारहवीं शताब्दी की अपूर्व रचना है। इसकी रचना रघुनाथ महंत ने की थी।

2.4.7 कोचराजसभा में रामकथा का अनुवाद

रघुराम और लक्ष्मीराम द्विज 'अयोध्याकांड', श्रीनाथ द्विज और रघुनाथ द्विज 'किष्किंधाकांड', रुद्रराम द्विज द्वारा 'अरण्यकांड' इत्यादि इस राज्य में अनुदित राम काव्य है।

2.4.8 असमिया काव्य और नाटक

असमिया राम-काव्य के अंतर्गत 'लक्ष्मणर शक्तिशील', 'महीरावण वध', रघुनाथ महंत कृत 'शत्रुंजय' तथा 'अद्भूत रामायण', धनंजय कृत 'गणक चरित्र', द्विज पंचानन कृत 'पातालीकांड रामायण', अठारहवीं शताब्दी के अंत में रचित श्रीकांत सूर्य विप्र कवि की 'तुलसीदासी लंकाकांड' भी प्रसिद्ध है। हरिहर विप्र का 'लवकुशर युद्ध', गंगादास कृत 'सीतार बनबास' काव्य भी रामकाव्य की परंपरा में आते हैं।

रामायण नाटकों में सर्वप्रथम शंकरदेव विरचित 'रामविजय' नाट तथा माधवदेव विरचित 'राम यात्रा' रचित हुआ था। इसके उपरांत ही अनेकों नाट्यों की रचना हुई थी, जिनमें उन्नीसवीं शताब्दी के भीतर तक 'पातालीकांड नाट', 'सीताहरण', 'रावणवध', 'रामवनवास', 'रावण वध' (द्वितीय) इत्यादि है। इनके अतिरिक्त सन् 2009 में डॉ. मालिनी विरचित 'बिदेह नंदिनी' पुस्तक भी आज के समाज में बहुत प्रचलित है।

2.5 निष्कर्ष

उपरोक्त सभी पुस्तकों, काव्यों तथा ऐतिहासिक प्रमाणों के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आदि काव्य वाल्मीकि द्वारा विरचित 'रामायण' ही मूल राम-कथा स्रोत है। इनके अतिरिक्त

भी आज के इस वर्तमान युग में अनेक रामविषयक काव्यों की रचना हुई है तथा हो रही है । परंतु उन सभी नामों का उल्लेख यहाँ संभव नहीं है । चूकि मेरे शोध का विषय ‘रामचरित मानस’ तथा ‘असमिया रामायण’ में राम भक्ति और उसकी प्रासंगिकता का शोध करना है । अतः अपने कार्य की प्रगति पर ध्यान देते हुए मैंने द्वितीय अध्याय ‘रामभक्ति काव्य परंपरा’ को अत्यंत संक्षिप्त रूप में यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।